शैतान का निशान

THE MARK OF THE BEAST

बाइबिल में, हजारों वर्षों से शैतान ऐसा क्या कर रहा है जिससे वह भगवान के लोगों पर प्रहार कर सके? एस्थेर के तीसरे अध्याय में लिखा हे की उसने सरकारी दबाव का इस्तेमाल किया जिससे वह भगवान के लोगों को भगवान के कानून को तोड़ने पर मजबूर कर सके. जैसा की हमें पता है की मोर्देकाई ने सूली पर चढ़ जाने का फैसला किया जब उसको भगवान् के दुसरे कानून का खंडन करने पर मजबूर किया जा रहा था. दानिएल के तीसरे अध्याय में हमने पढ़ा की षड्रक, मिशक और अबेद्नेगो ने जलते हुए आग की चिता में मर जाना स्वीकार किया जब उनको दूसरा कानून तोड़ने पर विवश किया जा रहा था. स्वयं दानिएल ने सिंहों की गुफा में मर जाना स्वीकार किया जब उन्हें पहला कानून तोड़ने पर मजबूर किया. इन तीनो ही जगह में हमने बाइबिल में देखा है की स्वयं भगवान ने उनकी रक्षा की है.

मोर्देकाई को राजा का पहला वफादार बनाया गया (एस्थेर ६: ११, ८:२, १५) और (एस्थेर ९:४, १०:२,३) और उसके जगह पर उसके शत्रु को सूली पर चढ़ाया गया (एस्थेर ७:९,१०). आग की चिता को साथ बार अधिक गरम किया गया: षड्रक, मिशक और अबेद्नेगो का साथ थो स्वयं परमेश्वर के पुत्र ने दिया और अग्नि उनका कुछ न बिगाड़ सकि. जिन लोगों ने उन्हें अग्नि में फेंका वह थो स्वयं आग की लपटों से जल कर ढेर हो गए (दानिएल ३:२३-२८, दानिएल ३:२२) सिंहों की गुफा में दानिएल को सिंहों ने कुछ न किया (दानिएल ६:२२-२३) दूसरी तरफ जो लोग दानिएल से पाप करवाना चाहते थे उन्हें अपने परिवार के साथ सिंहो ने भोजन बना डाला. (दानिएल ६:२४)

नए नियम के समय में रोमा साम्राज्य के नियमों के अनुसार रोम के अधिकारीयों की आराधना करवाया जा रहा था. भय के कारन अनेको लोगों ने इस नियम का अनुसरण किया. एक्ट्स १२:२१-२२ में लिखा है "हेरोद राजसी आन बान में सिंहासन पर बैठ कर लोगों को बता रहा था और लोग कहने लगे की **यह भगवान का स्वर है और मनुष्य नहीं**". इतिहास से पता लगता है की हजारों लोग जो भगवान की पहली कल्पना का उलंघन नहीं कर रहे थे (केसर की आराधना) उन्हें कोलोस्सियम में रोम साम्राज्य कैसा भयंकर मौत देता था. रेवेलतिओंस १३:४ में एक प्रवचन से हमें इस बात का पता लगता है की पगन रोम ने पापल रोम को 'अधिकार दिया'. इतिहास इस बात का साक्षी है और पगन केसरों की तरह अब कैथोलिक पापे अपने आप को भगवान बता रहे है.

"........पापे के अधिकार और सामाज्य केसर के नियमों के अनुसार लागू हुआ है" *लुसिउस फेर्ररी - "पोम्पता बिब्लिओथिक कनोनिक, जुरिदिचा, मोरालिस, ठो लोगिचा, अस्सतिचा, पोलेमिचा, रुब्रिस्तिका, हिस्तोरीका" वोलुमे व्, अर्तिक्ले ओन "पापा आर्टिकल २, कांसर्निंग थे एक्सटेंट ऑफ़ पापल डिग्निटी, ऑथोरिटी और दोमिनिओं एंड इन्फल्लिबिलिटी #१९, प्रसिधिकरण (परिस) ज प मिगने १८५८ एदितिओन.*

"पापे और भगवान एक ही हैं *और उसे स्वर्ग व धरती के सारे अधिकार है",* *पापे पिउस व्, बर्कले, चप्टर क्स्क्सवी, पृष्ट २१८, "सितिएस पेत्रोउस बेर्थानोउस".*

प्रवचन के बल पर वातिकान ने पुराने रोमे के नियमों का उद्धरण किया और पापे की आराधना करने की मांग की. पहली कल्पना का उल्लंघन न करने के कारन लगभग ५०० करोड़ लोग पापे के हाथों मरे गए ५३८ ए डी और १७९८ ए डी के बीच.

" थाट थे चुर्च ऑफ़ रोमे हस शेड मोरे इन्नोसेंट बलूद थान एनी ओथेर इन्स्तितुतिओन ठाट हस एवर एक्सिसतेद अमोंग मंकिंद, विल बे कुएस्तिओनेद बी नो प्रोतेस्तंत व्हो हस अ कोमेपेतेंत क्नोव्लेद्गे ऑफ़ हिस्टरी.........इट इस इम्पोस्सिब्ले तो फॉर्म अ कोम्प्लेते कोन्केप्तिओन ऑफ़ थे मुल्तितुदे ऑफ़ हेर विक्टिम्स, एंड इट इस कुइते सर्टेन ठाट नो पोवेर्स ऑफ़ इमगिनतिओन कैन अदेकुँतेली रेअलिज़े थेइर सुफ्फेरिंग्स"- व ए ह लेच्क्य, हिस्टरी ऑफ़ थे लाइफ एंड इन्फ्लुएंस ऑफ़ थे स्पिरिट ऑफ़ रतिओनलिस्म इन यूरोपे, वोल २, पेज ३२, १९१० एदितिओन (कैथोलिक एन्च्य्लोपेडिया, वोल१२ पृष्ट २६६).

इस रक्त के इतिहास से विरासत में जो भय मिला उस से जो दूसरी शाखाएं बनी उनमें भी यह पढाया गया की भगवान की कल्पना मानना अब जरूरत नहीं. ईसाई होने के नाते हमारा यह जानना जरूरी है कि शैतान हमें भगवान कि कल्पना तोड़ने पर क्यों मजबूर कर रहा है? यदि हम भगवान का वचन पढ़ें थो यह मालूम होगा कि जो भी उनके नियमों का अनुसरण करेगा उसे प्रवचन किया हुआ शैतान का निशान नहीं मिलेगा. रेवेलातिओंस १४: ९-११ कहता है ".......एक तीसरा फ़रिश्ता उनके पीछे चला और जोर से कहा कि **जो भी शैतान या उसके दर्पण कि आराधना करेगा उसके मस्तक या फिर उसके हाथों में यह निशान मिलेगा,** और इन लोगों को भगवन के क्रोध का रस पान करना पड़ेगा, और उसे अग्नि, गंधक से जलाया जायेगा और उनके इस दुर्गाथि का धुआं हमेशा के लिए निकलता रहेगा "

ध्यान रहे के यह मानव जाती के इतिहास का सबसे अन्तिम दिन रहेंगें. क्या स्वयं इसा मसीहा ने मथेव ५:१८ में ऐसा नहीं कहा था कि " भले ही आकाश व धरती मिट जाए मगर **<u>एक भी अक्षर भगवान् कि कल्पना से नहीं हटेगा.</u>** तो क्या संसार का अंत हो गया? क्या इसा मसीहा लौट आये? नहीं बिलकुल नहीं. तब जब भगवान का आना अब भी बाक्की है, तो फिर हम उनके कल्पनाओं से कैसे मुकर जायें? जॉन २:४ में लिखा है कि " जो यह कहता है कि मैं उसे जानता हूँ मगर उसकी कल्पना नहीं रखता, वह झूठा है". रेवेलातिओंस १४: १२ यह कहता है " यहाँ पर देखो **<u>संत लोगों</u>** का धीरज यह वह हैं **<u>जो भगवान कि कल्पना रखते हैं.</u>** पुराने नियम कि पुस्तिका में एच्क्लेस्तिंस १२:१३ कहता है " अब पूरी बातों का निचोड़ सुने, **<u>भगवान् से डरो और उनके दिए हुए कल्पनाओ का पालन करो.</u>**

रेवेलातिओंस १३:१६, १७ में हम यह देख सकतें हैं कि शैतान उसके निशान को लागू करने का प्रयत्न अवश्य करेगा. "वह **<u>हर किसी को छोटा, बड़ा, अमीर, दरिद्र सबको अपनी मस्तक या हाथों में इसे लगाएगा और जो यह निशान नहीं पायें व न तो खरीद सकेंगे न कुछ बेच सकेंगे</u>"** इस निशान का रहस्य क्या होगा? शैतान कि पिछली शरारतों को याद करते क्या यह कुछ ऐसा निशान होगा जो भगवान् कि कल्पनायों से कुछ सम्बन्ध रखता हो?

जब सरकार को कुछ लेखा जोखा करना होता है थो सरकारी निशान उस पत्र पर होना जरूरी हो जाता है. जब एक सरकारी ऑफिसर अपना पत्र प्रमाणित करता है तो उसमे:

१. अधिकारी या ऑफिसर का **नाम**
२. उसका **पद**
३. अधिकार कि **सीमा**

उदाहरण के लिए इसे हम हमारे राष्ट्रपती समझें थो यह इस प्रकार होगा - १. नाम -**प्रतिभा पाटिल २**. पद- **राष्ट्रपती** ३. सीमा - **भारत** और इसे कुल मिलकर हम ऐसे पढेंगे *भारत के राष्ट्रपती प्रतिभा पाटिल.* जब भी वह किसी पत्र को इस प्रमाण देतीं हैं उस पत्र का मान रहता है.

अब इसी प्रकार इश्वर का भी एक राज्य होता है और उनके अपने कायदे और कानून भी. इश्वर के कानून उनके दस कल्पनाएँ हैं. बल्कि सत्य थो यह है की पहले भगवान ने नियम बनायें और सारे मानव जाती ने उनका अनुगमन किया. इश्वर के कानून के बीचों बीच हम यह देख सकते हैं की उनके चौथे कल्पना में, जीवित भगवन की निशान भी वहां मौजूद है. सब्बथ के ही नियम में हम यह देख सकते हैं. **<u>छः दिनों में प्रभु ने आकाश और भूमि बनाया</u>** <u>(एक्सोदुस २०: ११)</u>

स्वयं अपने हाथों से लिखे गए इस नियम में भगवान ने अपनी निशान भी डाली है.

१. उनका **नाम** - प्रभु (मै हूँ **प्रभु** येही **मेरा नाम है** -इसैः ४२:८)
२. **पद- रचयिता (प्रभु ने बनाया)**
३. **सीमा- आकाश और भूमि**

कुलमिलाकर हम उनके हस्ताक्षर को यूँ पढ़ सकते हैं **" प्रभु, आकाश और भूमि के रचयिता".** जब हम उनके सब्बाथ का आचरण करते हैं थो हम उससे यह सिद्ध करते हैं की हम "उनके कर्मों का अनुस्मरण करते हैं" (प्सल्म्स ७७:११). अगर हम एक्सोदुस २०:८-११ पढ़ें तो देख सकतें हैं की सब्बाथ की कल्पना का प्रारंभ वाक्य ही **याद करना** है. प्रभु तो यह सब कुछ पहले से ही जानते थे की आगे चल कर शैतान हमारे साथ छल कर के हमें उनके शनिवार के सब्बथ आचरण से हटा कर रविवार के आचरण में लगा देगा. क्योंकि वह यह नहीं चाहता की सचे इश्वर की आराधना हो बल्कि वह तो सबसे अपना आराधना करवाना चाहता है. क्योंकि वह सबसे उपरवाले की थारह बनना चाहता है (इसैः १४:१४). अब हम यह साफ़ साफ़ देख सकते हैं की पापे के द्वारा बनाये नियम से शैतान हमें किस थारह उसकी आराधना करने में लगा रहा है. (रेवेलातिओंस १३:३) में यह प्रभु ने हमें बताया भी है. एक्ट्स ५: २९ में भी यह साफ़ लिखा है की "**हमें मनुष्य से ज्यादा भगवान के कहे हुए रास्ते पर चलना चाहिए".** हम चाहें तो यह भी परख सकतें हैं -गेनेसिस से लेकर रेवेलातिओंस थक कोई भी ऐसा वाक्य हमें नहीं मिल सकता जो यह सिद्ध करे की भगवान ने अपना सब्बथ शनिवार से हटाकर रविवार बनाया हो.

बाइबिल कहता है की **" याद करो** प्रभु के सब्बथ का और उसे पवित्र रखो" परन्तु रोमन कैथोलिक चुर्च कहता है " नहीं अपने शकती से मैंने उसे अब रविवार बनाया हैं और देख लो पूरी सभ्य मानव जाती अब उसके आगे शीश नवा रही है" फाठेर एन्रिघ्त, हिस्टरी ऑफ़ सब्बथ पृष्ठ ८०२

"गेनेसिस से रेवेलातिओंस थक एक भी ऐसा वाकया नहीं मिलेगा जो रविवार को शुद्ध करता हो. बाइबिल तो शनिवार को मान देती है, जिसे हम नहीं मानते" -जमेस कार्डिनल गिब्बोंस, थे फैथ ऑफ़ ओउर फठेर्स १९१७ पृष्ठ ७२, ७३

अब शैतान उन लोगों पर अपना अधिकार कैसे जताएगा जो उसका आदर नहीं करती? कुछ साल पहले जो हमने इदेंतित्य कार्ड के बारे में जो सुना था वह धीरे धीरे विश्व के सभी देशों में लागू हो जायेगा और रोमे सरे विश्व में अपना अधिकार जमएगा. इस कार्ड में तुम्हारे जांच के

लिए सारी जानकारी मौजूद रहेगी -नाम, पता, काम, तुम कितने पढ़े लिखे हो आदि. (अधिक जानकरी के लिए इस वेबसाइट पर लोगोन करे -www.remnantofgod.org/ID.htm) . जब यह लागू हो जायेगा तो इसके बिना न तुम कुछ खरीद सकते हो और न कुछ बेच सकते हो. रेवेलातिओंस १३ में हम यह देख सकते हैं.

जेरेमिः ३८:२३ में भी यह लिखा है " **<u>की तुम उनके हाथों नहीं बच पयोगे, वह तुम्हें हाथों से खेंच कर बाबिलोंन के राजा के पास लेकर जायेंगे."</u>** एक्क्लेसिअस्तेस ९:१० में भी ऐसा लिखा है " जो भी **<u>तुम्हारे हाथ</u>** कर सके कर लो क्योंकि कोई मरने के बाद कब्र में तो **<u>काम नहीं करता</u>**, जहाँ न विद्या है और न ज्ञान" हेब्रेव १०:१६ में देखें "**<u>प्रभु उनके मन में अपना कानून लिखेंगे</u>**" इस वाक्य से यह सिद्ध हो जाता है की हम योजनायें मन में बनाते हैं.

हाल ही में वैज्ञानिकों ने यह खोज निकला है की मनुष्य की दिमाग में ही वह योजनायें बनाता है. इसे हम यूँ समझें की हम अपने मस्तक में निशान पाते हैं जब हम मन से प्रभु की आराधना करते हैं. और जब अपने मन के विरुद्ध किसी और बात के लिए प्रेरित किया जाता है ताब हम इस निशान को अपने हाथ में पाएंगे. शाद्रक, मीशक, अबेद्नेगो और दानिएल को भी इस बात की परीक्षा देनी पड़ी. शैतान हमेशा से ही सरकारी दबाव का इस्तेमाल करता है. रोमे कुढ़ ही यह कहता है.

"**<u>रविवार हमारे अधिकार का निशान है, चुर्च बाइबिल के भी ऊपर है, सब्बथ की परिवर्तन इसे सिद्ध करता है "</u>** कैथोलिक रिकॉर्ड ऑफ़ लन्दन , १९२३.

वातिकान विश्व पर अपना कब्ज़ा पहले भी कर चूका है. अब भी १९२ देशों में १७५ उसके साथ बंधा हुआ है. इन सभी देशों के प्रमुख व्यक्ति उसके सामने शीश नवाते हैं और इस बात के प्रमाण फोटोग्राफ भी हैं. जो बाइबिल को मानते हैं वह सब लोग रविवार को महत्व देते उन्हें दिखाई पड़ते हैं. और उन्हें अब ऐसा क्यों न लगे की वह बाइबिल से भी ऊपर उठ गए हैं? रेवेलातिओंस १३:३ में यह लिखा है की पूरा विश्व उसके पीछे घूमता है.

जॉन पुल २ पापे का कहना था की सरे इसी लोग स्वयं ही रविवार को महत्व देने पर मजबूर हो जायेंगे. **<u>रविवार के नियमों को लागू करने पर बल दें.</u>**

अखीर में:

अमोस ८:११ में प्रवचन हुआ है की "अन्तिम दिनों में अधिक से अधिक इसाई लोग प्रभु का कहना नहीं मानेंगे." इसके बारे में न कुछ कह सकेंगे और न खुद समझ पाएंगे. इसा मसीहा तो स्वयं रातों रात अँधेरे में चोरों की भांति आएंगे और उनका विनाश होगा जो सत्य को नहीं मानता, क्योंकि सत्य के विरोध में रहना ही कुछ लोगोन ने हित में समझा. होसा ४:६ में लिखा है "मैं भी तुम्हें भूल जयोंगा क्योंकि मेरे नियमों को तुम भी भूल गए थे. " १ ठेस्लोनिंस ५:२,४ अगर तुम इसे समझ कर मेरा आदर करोगे तो तुम अन्धकार में नहीं रहेंगे.

हमारी तो येही प्रार्थना है की अगर आप अब भी रविवार को महत्व देते हैं तो रेवेलातिओंस १८:४ के मुताबिक **<u>उसमे से निकल आईये,</u>** थकी उसके पापों का भोज आप पर न आयें.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें. .

www.RemnantofGod.org/mark.htm

Presents of God ministry
where the truth is provided
www.RemnantofGod.org